निष्कर्ष-

प्रस्तावित शोध को पूर्णता देने के बाद निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि भाषा नाटक का विकास मध्यकाल में लगभग 10वीं शताब्दी तक हो चुका था। मध्यकाल का यह एक नया प्रयोग था, जो संस्कृत नाटकों में किया गया। जिसका उदेश्य था आम जनता के बीच नाटक की लोकप्रियता को बढ़ाना क्योंकि नाटक ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा मनोरंजन के साथ-साथ आसानी से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि समस्याओं से हर वर्ग के जनता को अवगत कराया जा सकता है। चूँकि मध्यकाल तक आते-आते देश में अन्य शासकों के आक्रमण तथा नई सत्ता (मुग़ल राज्य) स्थापित होने के कारण संस्कृत नाटक पतन की ओर जा रहा था। किन्तु इसी युग में देश के कुछ कोनों में हिंदू-नरेशों ने नई नाट्य-विधाओं के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। जिसके फलस्वरूप नई नाट्य-शैली 'भाषा-नाटक' का विकास हुआ। जिसकी विकास यात्रा मध्यकाल से शुरू होती है।

विद्वानों ने भाषा-नाटक को कई नामों से संज्ञापित किया है, जैसे— संगीतक, भाषा संगीतक, संगीत नाटक आदि। सहगान और सहवाद्य-वादन के अलावा नृत्य, गीत और संवाद यह सभी तत्व भाषा संगीतक की विशेषताएं हैं। जयदेव के प्रभाव से नृत्य संगीत का समावेश और तीसरा संस्कृत-प्राकृत मूल के बीच भाषा-गीतों आदि का समावेश रहता है।

संगीत, नृत्य और संवाद तीनों ही परंपरागत नाट्यशैली के अनिवार्य अंग हैं और उनके सम्मिश्रण से ही सौन्दर्य-बोध ज्ञान प्राप्त होते हैं। प्रस्तावित शोध में मध्यकालीन नाट्य की

सांगीतिक पद्धति (अंकिया-नाट और किरतनियाँ के विशेष सन्दर्भ में) का अध्ययन करने के उपरांत यह ज्ञात होता है कि—

1. भाषा नाट्य शैली के सभी नाटकों में नृत्य और संगीत का अत्यधिक उपयोग किया गया है।
2. इसमें देशी तथा मार्गी दोनों प्रकार के संगीत का प्रयोग किया गया है।
3. इन नाट्य शैलियों में जो संगीत प्रयुक्त हुआ है, वह रागानुबद्ध तथा तालानुबद्ध होता है।
4. नाटकों में जिस संगीत का प्रयोग हुआ वह रस तथा भाव पर आधारित है।
5. इसमें प्रयुक्त संगीत में दृश्य की प्रधानता है। जिसमें चरित्र-चित्रण, घटनावली, पात्रों का प्रवेश तथा प्रस्थान, घटना के आधार पर रस, ताल आदि समाहित हैं।
6. इस नाट्य शैली में विभिन्न वाद्यों का भी प्रयोग हुआ है।
7. दोनों शैलियों का आधार ग्रन्थ जयदेव कृत 'गीतगोविन्द' है। जिसमें नृत्य, गीत, संगीत की प्रचुरता है।
8. दोनों नाट्य शैली में क्षेत्र में पहले से प्रचलित नृत्य और संगीत का प्रयोग किया गया है।
9. गीतों में प्रयुक्त राग हिन्दुस्तानी तथा कर्नाटकी दोनों संगीत पद्धति का प्रयोग किया गया है।

10.अंकिया-नाट और किरतनियाँ के सांगीतिक पद्धति में समानता के साथ कुछ भिन्नताएँ भी हैं जिसके कारण दोनों शैली एक-दूसरे से अलग है, और यही दोनों की विशेषताएँ हैं।

चूँकि विद्वानों ने मध्यकाल को अन्धकार युग माना है तथा किसी भी कला और संस्कृति के विकास को नकारा है, परन्तु इस शोध के दौरान ऐसा ज्ञात हुआ कि इस काल में कला और संस्कृति का उतरोत्तर विकास हुआ था किन्तु वर्तमान समय में यह कला विलुप्त होती सी प्रतीत हो रही है और यह कला जगत के लिए चिंता का विषय है। अतः आगे आने वाली पीढ़ी के लिए शोध की दिशा तो प्रदान करेगा ही साथ ही समाज के लिए भी यह हितकारी हो सकता है।